वर्तमान समय में गृह प्रबंधन की भू मका का महत्त्व

अर्चना कुमारी

सहायिका, रमेश झा महिला महा वद्यालय, सहरसा

गृह-प्रबंध शब्द का प्रयोग दैनिक जीवन में साधारणत: कया जाता है तथा सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति इसके अर्थ से परि चत समझे जाते हैं। फर भी इस शब्द के अर्थ को स्पष्ट कया जाना आवश्यक है। साधारण शब्दों में प्रबंध एक साधन मात्र है। अर्थात् हमारे पास जिस परिस्थिति में जो भी साधन वर्तमान है उसका सर्वोत्तम उपयोग इस ढंग से कया जाए जिससे हमारी इच्छाएँ और हमारे उद्देश्य पूरे हो सकें । यहाँ साधनों का अर्थ उन वर्तमान साधनों से है जो हमारे पास है तथा इच्छाओं का अर्थ लक्ष्यों से है। साधनों के अन्तर्गत परिवार के सभी सदस्यों के साधन सम्मि लत होते हैं। उनमें केवल समय, शक्ति, धन और भौतिक वस्तुएँ ही सम्मि लत नहीं होती बल्कि परिवार के सदस्यों का ज्ञान, रू चयाँ, योग्यताएँ, कुशलताएँ एवं अ भवृतियाँ तथा सामुदायिक सु वधाएँ भी सम्मि लत होती हैं। गृह प्रबंध पारिवारिक जीवन का प्रशासनात्मक पक्ष है। इसमें परिवार के आ र्थक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, षारीरिक, आध्यात्मिक तथ शल्प वज्ञान संबंधी पारिवारिक जीवन से संब धत परिस्थितियों का सामना करने, समस्या को सुलझाने तथा पारस्परिक दुखों को कम करने में सहायता देने का कार्य कया जाता है।

गृह-प्रबंध कला के रूप में घर में प्रारंभ से ही वर्तमान रहता है। घर में अनेक कार्य होते रहते हैं जिनको सुचारू रूप से करने के लए गृह-प्रबंध का आश्रय लेना पड़ता है। संसार के प्राचीन ग्रंथों में भी उन गृहि णयों की चर्चा की गई है, जो अपने घर को निपुणता तथा कुशलतापूर्वक चलाती थीं।

गृह-प्रबंध अत्यंत सूक्ष्म एवं कुशलतापूर्वक बनायी जाने वाली योजना है जिसमें परिवार के सभी साधनों का उपयोग परिवार के सदस्यों की संतुष्टि और अ धकतम लाभ के लए कया जाता है। इसके अंतर्गत मुख्यरूप से गृह कार्यों को संपन्न करने के लए तथा अपने लक्ष्यों पर पहुँचने के लए पारिवारिक साधनों के आधार पर आयोजन संगठन, कार्यान्वयन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन आते हैं। गृह-प्रबंध की ये सभी प्र क्रयाएँ यथा- आयोजन, योजना को कार्यरूप में परिणत करते समय नियंत्रण करना तथा भावी योजना के रूप में परिणामों का मूल्यांकन करना, निर्णय लेना एक दूसरे से संब धत हैं।

सुव्यवस्थित घर उसी को समझा जाएगा, जहाँ परिवार के सभी व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यों की पूर्ति से संतुष्टि और आनन्द प्राप्त हो, आपस में वरोध, द्वेश, ईर्ष्या आदि उत्पन्न न हो चाहे कार्य गृहिणी द्वारा संपादित कया जाए अथवा परिवार के सभी सदस्यों के सहयोग से कया जाए। यदि परिवार के सदस्यों को पारिवारिक कार्यों से असंतोष है, तो अ धक समय व्यर्थ की बहस में ही समाप्त हो जाएगा। अत: गृह-प्रबंध का महत्त्व कार्य की समाप्ति से नहीं, बल्कि संतुष्टि से है। गृह-प्रबंध का मुख्य उद्देश्य संपादित कार्यों का मूल्यांकन तथा पारिवारिक

Peer Reviewed

लक्ष्य प्राप्त करना है। मूल्यांकन परिवार का आदर्श तथा परंपरागत सद्धांत है। परिवार जो प्राप्त करना चाहता है, उसे 'लक्ष्य' कहते हैं।

प्रत्येक घर में अनेक प्रकार के गृह-कार्य होते हैं। घर की सफाई एवं सुव्यवस्थित करना, परिवार के लए पौष्टिक भोजन तैयार करना एवं परिवार के लोगों को उसे खलाना, कपड़े, बर्तन आदि की सफाई आदि ऐसे कार्य हैं जिन्हें गृहिणी को प्रतिदिन करना पड़ता है। बाजार से वस्तुएँ खरीदना, बच्चों को पढ़ाना, उसके मनोरंजन का प्रबन्ध करना, आय-व्यय का हिसाब रखना, घर के बुढ़े बुजुर्गों की देख-रेख करना, नए वस्त्र सीना तथ पुरानों की मरम्मत करना, बुनाई एवं कढ़ाई आदि भी ऐसे आवश्यक कार्य हैं जिनको उसे स्वयं करना पड़ता है या अन्य व्यक्तियों की सहायता से संपन्न करना पड़ता है। घर के सभी कार्यों में वह नौकरों, पति, बच्चे या अन्य लोगों की सहायता लेती हैं परन्तु इन कार्यों की सफलता या असफलता का अंतिम उत्तरदायित्व उसी पर रहता है।

गृह-प्रबन्धन पर ही परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य एवं कार्यकुशलता निर्भर करती है। - प्रबन्धन द्वारा ही परिवार के सदस्यों में स्नेह, ज्ञान कला तथा धर्म की भावना आती है। गृहप्रबन्धन की आवश्यकता अतीत-काल में इस लए अनुभव की गई क्यों क साधन सी मत थे और कार्य अनेक करने पड़ते थे। धीरे-धीरे समस्याएँ अ धक जटिल होती गई और सी मत साधनों के अनन्त साध्यों को पूरा करने में कठिनाई होने लगी। साधनों की कछ वृ द्ध हई परन्तु आवश्यकताओं की वृ द्ध कई गुणा हुई। इस तरह सी मत साधनों में असी मत आवश्यकताओं का समायोजन करने के लए गृह- प्रबन्धन की आवश्यकता और महत्त्व और भी अ धक बढ़ गया। गृह- प्रबन्धन करने के लए कसी परिवार में व भन्न सद्धांतों का प्रयोग होता है। एक लम्बी चंता की प्र क्रया पूरा करने पर गह- प्रबन्धन हो पाता है।

गृह-कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लए गह- प्रबन्धन में पारिवारिक जीवन का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। यह एक परिवर्तनशील गत्यात्मक प्र क्रया है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से गृह-कार्यों को संपन्न करने के लए तथा अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लए पारिवारिक साधनों के आधार पर आयोजन, संगठन, कार्यान्वयन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन आते हैं। प्राप्त वर्तमान साधनों के आधार पर अपने लक्ष्य को कस सीमा तक कुशलतापूर्वक प्राप्त कया जा रहा है, यह अ धकांश रूप से पति-पत्नी की गह-प्रबंध योग्यता, रू च और कशाग्र बु द्ध पर निर्भर करता है।

गृह- प्रबन्धन की सभी प्र क्रयाएं जैसे- आयोजन, योजना को कार्यरूप में परिणत करते समय नियंत्रित करना तथ भावी योजना के रूप में परिणामों का मूल्यांकन करना, निर्णय लेना एक दूसरे से संबं धत है। गृह-प्रबन्धन वस्तुतः वह सुनियोजित एवं सजीव क्रया है, जो सोपानों के साथ परिवार के लक्ष्यों की प्राप्ति एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लए महत्त्वपूर्ण कार्य करती है।

'गृह प्रबन्ध' एक व्यवस्था है जो 'साधन' पर निर्भर है। हमारे पास. जिस परिस्थिति में जो भी साधन का अर्थ है जो हमारे पास है और इच्छाओं का अर्थ है-लक्ष्यों से जिसे प्राप्त करना चाहते हैं। साधनों के अन्तर्गत परिवार के सभी सदस्यों के साधन सम्मि लत होते हैं उनमें केवल समय, शक्ति, धन और भौतिक वस्तुएँ ही सम्मि लत नहीं होती बल्कि परिवार के सदस्यों का ज्ञान, रू चयाँ योग्यताएँ, कुशलताएँ एवं सामूदायिक सु वधाएँ भी

सम्मि लत होती है। गृह प्रबंध पारिवारिक जीवन का प्रशासनात्मक पक्ष है। इसमें परिवार के आ र्थक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक शारीरिक, आध्यात्मिक तथा शल्प वज्ञान संबंधी पारिवारिक जीवन से संब धत दुखों को कम करने में साथ देने का कार्य कया जाता है।

अतः प्रबंध करना एक कला है और इसका अर्थ सौन्दर्य से है जो प्रत्येक मनुष्य में कसी-न- कसी रूप में परिचायक है, यह कुशलता बौ द्धक शक्तियों पर निर्भर करती है। इस लए गृह व्यवस्था पूरे वश्व में एक सामान्य व्यवस्था है जिसमें आय का अ धकांश (धन) भाग खर्च होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है क "प्रबंध' एक मान सक प्र क्रया है। गृह प्रबंध अत्यंत सूक्ष्म एवं कुशलतापूर्वक बनायी जानेवाली योजना है जिसमें परिवार के सभी साधनों का उपयोग परिवार के सदस्यों की संतुष्टि और अ धकतम लाभ के लए कया जाता है। इसके अन्तर्गत आयोजन, कार्यान्वयन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन आते हैं। गृह प्रबंध की ये सभी प्र क्रयाएँ एक दूसरे से संबंध में आते हैं।

उत्तम गृह प्रबन्धन उसी को समझा जायगा जहाँ परिवार के सभी व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यों की पूर्ति से संतुष्टि और आनंद प्राप्त हो। यदि परिवार के सदस्यों को परिवार कार्यों से असंतोष है तो अ धक समय व्यर्थ की बहस में समाप्त हो जायगा। अतः गृह प्रबंधन का महत्त्व कार्य की समाप्ति से नहीं बल्कि संतुष्टि से है।

संदर्भ :

1. पाटनी, मंज, गृह प्रबन्ध, स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा, 2009

2. मेहता, चन्द्रकांता, गृह- वज्ञान, वश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2010

Peer Reviewed